शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचन्द के साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप

प्रियंका गुप्ता (शोधार्थी)
एडवांस डेंटल क्लिनिक
अलवर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी देश के विकास के विभिन्न सोपानों को समाज में स्त्री की स्थिति से समझा जा सकता है। समाज में महिला को प्राप्त होने वाले महत्व से समाज के विकास का पता चलता है। साहित्य में समाज का यथार्थपरक चित्रण होता है। साहित्यकार की दृष्टि व्यापक रूप से समाज के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करने में समर्थ होती है। उपन्यासकार और कहानीकार प्रेमचंद ने अपने साहित्य में स्त्री के विभिन्न रूपों को चित्रित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रेमचन्द के साहित्य मने नारी के बदलते स्वरूप पर विचार किया गया है।

भूमिका

साहित्य और समाज एक-दूसरे के अभिन्न अंग हैं। साहित्य समाज की गतिविधियों का दस्तावेज है। साहित्य के माध्यम से समाज के सम्पूर्ण जीवन को समझा जा सकता है। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य रूपी दपर्ण में देखा जा सकता है। साहित्य में जनता एवं समाज की चित्तवृतियाँ, आकाँक्षाएँ आदि संचित रहती हैं। कोई भी साहित्य सामाजिक चेतना के अभाव में नहीं रचा जा सकता है। नारी भी इस समाज की एक अंग है, परन्तु प्रेमचन्द पूर्व युगीन समाज में नारी के जो चित्र उपस्थित होते हैं, उसमें नारी की स्थिति एकदम दीन-हीन, लाचार एवं पराधीन ही थी।

"प्रेमचन्द पूर्व युगीन उपन्यासकारों का ध्यान विशेष रूप से उपदेश देना तथा जासूसों के कार्य, तिलस्म आदि बातों पर होने के कारण उन्होनें नारी जीवन का विशेष चित्रण नहीं किया। केवल कथावस्तु को बढ़ाने के लिए एवं रोचक बनाने के लिए आवश्यकतानुसार नारी चित्रण का उपयोग किया है। अतः इन उपन्यासों में चित्रित नारियों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व या व्यक्तित्व दिखाई नहीं देता है।"1

डॉ. सुरेश सिन्हा के अनुसार "उस नए युग में नारी के ऊपर से उस भौंडे कृत्रिम और अविश्वासपूर्ण आवरण को उतार कर जिसे प्रेमचन्द पूर्व काल के उपन्यासकारों ने अपनी तथाकथित आदर्शवादिता एवं सुधारवादिता के जोश में आकर पहना दिया था और जिसके फलस्वरूप नारी का स्वरूप बोझिल ही नहीं हो गया था, आडंबरपूर्ण और अविवेकपूर्णसा प्रतीत होने लगा था। नारी की आत्मा को उसकी तमाम अच्छाईयों और बुराईयों के साथ प्रेमचन्द ने पहली बार यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।"2

प्रेमचन्द साहित्य मे नारी

प्रेमचन्द जी के साहित्य में नारी के ढेरों रूप हमने देखे, जिनमें समाज को देखने, परखने और जाँचने का मौका मिला। प्रेमिका, विधवा, माता, परिणीता, मेहनतकश, वेश्या और समाज सेविका आदि कई रूपों में उनके नारी पात्र अमिट छाप

छोड़ते हैं। जहाँ वर्तमान और भूतकाल की विषम स्थिति के दर्शन उनके उपन्यासों में होते हैं, वही भविष्य को भी काफी आगे तक देखा गया है। अतः उनके साहित्य में नारी पात्र, स्त्री-विमर्श का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्त्री की मनोदशा, उसकी जटिलताओं, समाज में उसकी स्थिति पर ढेरों साहित्य रचे गए, उनमें साहित्य सम्राट प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रेमचन्द जी के नारी पात्रों में शहरी वर्ग, गाँव का किसान समुदाय और अभिजात्य वर्ग के दर्शन होते हैं। अतः इनके व्यवहार, आचरण, प्रतिक्रियाओं पर सामंती-आर्थिक व्यवस्थाओं का पूरा प्रभाव पड़ता है। उनकी कृतियों में सामाजिक परिस्थितियाँ सत्यता लिए हुए ज्यों की त्यों नजर आती हैं। संघर्षरत एवं मेहनतकश नारियाँ प्रेमचन्द के साहित्य में प्रमुख हैं।

गोदान में धनिया सशक्त इरादे की निडर और धैर्यवान स्त्री यथासंभव परिस्थितिवश विरोध और विद्रोह का साहस रखती है। 'झुनिया' प्यार करके शादी का फैसला करती है। यहाँ वह पुरुष से ज्यादा सशक्त है। पति में हिम्मत नहीं होने की वजह से सास, ससुर को अपने रिश्ते के बारे में खुद बताती है।

स्त्री को पुरुष की साथी होना चाहिए, न की सेविका यह स्थिति काफी दिनों तक समझी नहीं जा सकी या स्त्रियों में स्वीकारने की हिम्मत नहीं थी। प्रेमचन्द जी 'कायाकल्प' उपन्यास की नारी पात्र के माध्यम से इसे समझाने की कोशिश करते हैं। नायक की स्त्री पूछती है, "नारी के लिए पुरुष सेवा से बढ़कर और कोई विलास, भोग एवं श्रृंगार नहीं है परन्तु कौन कह सकता है कि नारी का यह त्याग उसका यह सेवा भाव ही आज उसके अपमान का कारण नहीं हो रहा है।"3

प्रेमचन्द जी के नारी पात्रों में 'जालपा' (गबन उपन्यास की नायिका) एक नए ढंग की स्त्री है। वह परिस्थितियों से टक्कर लेती है, लेकिन कभी धैर्य नहीं खोती। भारी से भारी मुसीबत पड़ने पर वह विवेक से काम लेती है और कठिनाईयों का सामना करने के लिए नए-नए दावं-पेच निकाल लेती है। वहीं प्रेमचन्द जी ने अपने उपन्यास 'कायाकल्प' की नारी पात्र 'अहिल्या' को इतना सबल बनाया है कि जब साम्प्रदायिक दंगे के दौरान ख्वाजा साहब का बेटा उसे उठा कर ले जाता है और बालात्कार की चेष्टा करता है तो वह उसकी ही छुरी से उसकी हत्या कर देती है।

'मंगलसूत्र' उपन्यास में प्रेमचन्द जी नारी के आश्रिता होने और उसके विरोध के मुद्दे को दर्शाते हैं। संतकुमार अपनी पत्नी पुष्पा से कहते हैं, "जो स्त्री पुरुष पर अवलंबित है, उसे पुरुष की हुकूमत माननी पडेगी।"4 पत्नी पुष्पा का उत्तर हमें तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति और उसका विरोध बयान करता है। "अगर मैं तुम्हारी आश्रिता हूँ, तो तुम भी मेरे आश्रित हो। मैं तुम्हारे घर में जितना काम करती हूँ उतना ही काम दूसरों के घर में करूँ, तो अपना निर्वाह कर सकती हूँ या नहीं बोलो ?"5

प्रेमचन्द जो इशारा कर गए थे, आज के नारी समाज में आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बदलाव परिलक्षित होते हैं। प्रेमचन्द जी ने अपनी कहानी 'बडे घर की बेटी' में पुरुष पात्र श्रीकंठ के मुख से नारी की प्रतिष्ठा का बखान कराया है तथा दर्शाया है कि नारी अन्याय सहन नहीं करेगी। श्रीकंठ अपने पिता से कहते हैं, "जिस स्त्री की मान प्रतिष्ठा का ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार मुझे असहय है।"6 अब पुरुष खुलकर अपनी स्त्री का साथ देता है तथा उसके साथ

होने वाले अन्याय का विरोध करता है। प्रेमचन्द जी की 'जेल' कहानी में उन्होंने ग्रामीण स्त्री मृदुला में सच्ची आन्दोलनकारी नारी का जीवन समाज में प्रस्तुत किया है। यह भी बताया है कि ऐसी बहुत सी स्त्रियाँ देश की स्वाधीनता के लिए जेल चली गयीं थीं।

इस सन्दर्भ में डॉ. कृष्णचन्द्र पाण्डेय का कथन है, "नारी आन्दोलन से जहाँ एक ओर देश की नारियों में जागृति पैदा हो रही थी वहीं दूसरी ओर उनके सहयोग से चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन को भी शक्ति मिल रही थी।"7 'घासवाली' कहानी में मुलिया दलित नारी है। मुलिया में प्रेमचन्द जी ने साहसी, स्वाभिमानी, गर्वीली स्त्री के गुणों का वर्णन किया है। एक दिन मुलिया घास काटने गयी थी कि युवा ठाकुर चैनसिंह ने उसका हाथ पकड लिया और बोला, "मुलिया तुझे क्या मुझ पर जरा भी दया नहीं आती ? मुलिया का वह फूल-सा खिला हुआ चेहरा ज्वाला की तरह दहक उठा। वह जरा भी नहीं डरी, जरा भी न झिझकी, झोला जमीन पर गिरा दिया और बोली मुझे छोड़ दो, नहीं मैं चिल्लाती हूँ।8

प्रेमचन्द जी ने अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' की नायिका सुखदा को राजनैतिक व सामाजिक कार्यों में सक्रिय दिखाया है। सुखदा किसानों और मजदूरों का नेतृत्व करती है। "सुखदा के मुख पर आत्म गौरव की झलक आ गयी - हमें न्याय की लड़ाई लड़नी है, न्याय हमारी मदद करेगा। हम और किसी की मदद के मोहताज नहीं हैं।"9 इस प्रकार प्रेमचन्द ने सुखदा के माध्यम से मध्यवर्ग की नारी की कर्मठता, न्यायप्रियता, जागरूकता व दृढ़ चरित्र का विवेचन किया है।

'गोदान' उपन्यास में प्रेमचन्द जी के नारी पात्र में हम नारी स्वतंत्रता तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव दोनों को साथ देख सकते हैं। मालती की बहन सरोज इसी वर्ग के पात्रों में से है, "सरोज उत्तेजित होकर बोली - हम पुरुषों से सलाह नहीं मांगती, अगर वह अपने बारे में स्वतन्त्र हैं, तो स्त्रियाँ भी अपने विषय में स्वतंत्र हैं। युवतियाँ अब विवाह का पेशा नहीं बनाना चाहती हैं। वह केवल प्रेम के आधार पर विवाह करेंगी।"10 'कर्मभूमि' की मुन्नी में प्रारम्भ से ही आत्मसम्मान, नैतिक साहस व आत्माभिव्यक्ति की भावना थी। वह अत्याचार सहन नहीं कर सकती थी। इन्हीं गुणों के कारण वह दो आत्याचारी अंग्रेजों की हत्या कर डालती है। यह नारी पूर्णरूप से सत्याग्रह से प्रभाक्ति थी। इसी लिए वह मृत गाय के शरीर के पास बैठकर जो सत्याग्रह करती है, उस पर महात्मा गांधी जी के सत्याग्रह का पूरा प्रभाव लक्षित होता है। वह उपन्यास में कहती है, "अब जिसे गंडासा चलाना हो चलाए बैठी हूँ।11

वहीं 'मंगलसूत्र' उपन्यास में भी लेखक ने प्रगतिशील नारी का चित्रण किया है। स्त्री पात्र पुष्पा मध्यवर्ग की प्रगतिशील नारी है, जो पति के अत्याचार का मूल कारण आर्थिक कमी को बताती है। उसका विचार है कि पति की सम्पत्ति व घर पर पत्नी का पूरा अधिकार होता है। "पुष्पा ने आवेश के साथ कहा - हम भी तो वही आत्मबल, शक्ति और कला प्राप्त करना चाहती हैं लेकिन तुम लोगों के मारे जब कुछ चलने पाए मर्यादा और आदर्श और जाने किन-किन बाहानों से हमें दबाने और हमारे ऊपर हुकूमत जमाए रखने की कोशिश करते रहते हो।"12

अतः पुष्पा का यह कथन आज की प्रगतिशीलल नारी का प्रतिनिधित्व करता है, जो आत्मनिर्भर बन कर रहना चाहती है, पुरुष के अत्याचार

सहकर उस पर निर्भर होकर नहीं।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कवि, लेखक जनता के दु:खों से अपरिचित और उदासीन रह नहीं सकता। उसमें सजग और सचेत रहकर एक जागरूक प्रहरी की भूमिका आवश्यक है। वह सचेत होकर समाज को सही दिशा देने एवं उसका मार्ग प्रशस्त करने में अपनी अहम् भूमिका निभाता है। साहित्य में जीवन-मूल्य कल्पनाजन्य नहीं होते, बल्कि साहित्यकार के अनुभूत सत्य होते हैं, जो उसकी आत्मोपलब्धि से प्राप्त सुन्दरता, महत्त्व आदि को समाज द्वारा जीवन-मूल्यों के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। साहित्य से वर्तमान और भविष्य की समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। सत्साहित्य वही है जिससे समाज का सच्चा कल्याण हो, जो दृष्टि ही नहीं, अन्तर्दृष्टि भी देता है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रख कर हम कह सकते है कि प्रेमचन्द की लेखनी अन्ततः अपने सद् प्रयासों में सफल होती है और रूढ़ मान्यताओं में जकडी नारी को प्रगति की राह पर ले जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 कुलकर्णी, डॉ. रेवा, हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, (1994) पृष्ठ 1 (भूमिका से)

2 सिन्हा, डॉ. सुरेश, प्रेमचन्द और उनकी नायिकाएँ, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, (1967), पृष्ठ 145

3 प्रेमचन्द, कायाकल्प, भारतीय साहित्य संग्रह, (2010), पृष्ठ 444

4 प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा एवं मंगलसूत्र (दो उपन्यास), विश्वबुक्स प्रकाशन, बदरपुर, नई दिल्ली, पृष्ठ 10

5 प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा एवं मंगलसूत्र (दो उपन्यास), विश्वबुक्स प्रकाशन, बदरपुर, नई दिल्ली, पृष्ठ 10

6 प्रेमचन्द, मानसरोवर भाग - 7, बड़े घर की बेटी, सुमित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद (2011), पृष्ठ 87

7 चन्द्र, डॉ. कृष्ण, प्रेमचन्द के जीवन-दर्शन के विधायक तत्व, रचना प्रकाशन, खुल्दाबाद, इलाहाबाद (1970), पृष्ठ 160

8 प्रेमचन्द, मानसरोवर भाग - 1, घासवाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (2012), पृष्ठ 248

9 प्रेमचन्द, कर्मभूमि, मनोज पब्लिकेशन, चाँदनी चौक, दिल्ली (2003), पृष्ठ 182

10. प्रेमचन्द, गोदान, मनोज पब्लिकेशन, चाँदनी चौक, दिल्ली (2004), पृष्ठ 159

11 प्रेमचन्द, कर्मभूमि, मनोज पब्लिकेशन, चाँदनी चौक, दिल्ली (2003), पृष्ठ 118

12 प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा एवं मंगलसूत्र विश्वबुक्स प्रकाशन, बदरपुर, नई दिल्ली (2007), पृष्ठ 124